स्थान पर बटुकचंद्र उपाध्याय अधिशासी अभियंता के पद स्थापित होने, तत्पश्चात कमलाकांत बर्मा के उसी पद पर पुनः स्थानांतरण होने और एक बार फिर बटुक चंद उपाध्याय के उन्हीं दांव पेचों का इस्तेमाल करके कमलाकांत वर्मा को हटाकर अपनी पुरानी जगह पर आ जाने का वर्णन है। इस तरह तबादला करवाने और रुकवाने के लिए दोनों अधिशासी अभियंता तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं। पैसे देकर अपना तबादला करवाते हैं और फिर पैसे देकर तबादला रुकवाते हैं। तबादले के माध्यम से भ्रष्टाचार की लूट किस तरह मची हुई है और जनता का पैसा किस तरह से लूट की भेट चढ़ जाता है, इसका चित्रण इस उपन्यास में बखूबी हुआ है। भ्रष्टाचार की जो कार्य संस्कृति सरकारी दफ्तरों में व्याप्त है यह उपन्यास उसकी एक बानगी प्रस्तुत करता है।

विभूति नारायण राय के रचनाओं के पात्र किसी काल्पनिक दुनिया से नहीं होते हैं, बल्कि हमारे आस-पास के घर-परिवार व जीवन के हिस्से लगते हैं। राय के पात्र अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ कथा पटल पर उपस्थित होते हैं। इन पत्रों की भूमिका एक पक्षीय नहीं होती है वरन बहुआयामी जीवन चरित्रों के साथ प्रस्तुत होते हैं। इनके तीन उपन्यास 'शहर में कर्फ्यू', 'किस्सा लोकतंत्र' और 'तबादला' की पृष्टभूमि में लोकतंत्र है। लोकतंत्र का अपहरण किस तरह से राजनेता, अपराधी और प्रशासन के आला अधिकारी मिलकर करते हैं उपन्यासों की केंद्रीय अंतर्वस्तु है।

**********

**संदर्भ :-**

1. सिंह, पुष्पपाल,(2015). समकालीन हिन्दी कहानी: युगबोध का संदर्भ.
2. राय, विभूति नारायण. (2003). शहर में कर्फ्यू, भूमिका से, इलाहाबाद : इतिहास बोध प्रकाशन.
3. गुप्त, शंभु और जैन सर्वेश . (2012). अनहद गरजै. दिल्ली: शिल्पायन प्रकाशन.
4. नेहरू, जवाहरलाल.(198). डिस्कवरी ऑफ इंडिया, दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. सिंह, विजेंद्र नारायण एवं सिंह, कृष्णकुमार. (2015). इलाहाबाद: साहित्य भंडार.
6. यादव, राजेन्द्र. (अगस्त, 2003). हंस अक्षर प्रकाशन: दिल्ली.

# फादर कामिल बुल्के का हिंदी साहित्य में योगदान

**सौरभ शुभम**
(पीएचडी स्कॉलर)
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

फादर कामिल बुल्के (1909–1982) हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक हैं, जिन्हें अक्सर अंतरसांस्कृतिक समझ और विद्वता का प्रतीक माना जाता है। एक बेल्जियन जेसुइट पादरी, जिन्होंने अपना जीवन भारत को समर्पित किया, बुल्के ने न केवल हिंदी भाषा में महारत हासिल की बल्कि इसके प्रमुख समर्थकों में से एक बन गए। उनकी यात्रा केवल उनकी भाषाई विशेषज्ञता की गहराई के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य के सांस्कृतिक और बौद्धिक ताने-बाने में उनके योगदान के लिए भी उल्लेखनीय है। बुल्के का कार्य इस बात का शानदार उदाहरण है कि कैसे विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि से आने वाले व्यक्ति किसी भाषा और उसके साहित्यिक परंपराओं में गहरा योगदान दे सकते हैं। उनके कार्यों में अनुवाद, शब्दकोश निर्माण, और विद्वतापूर्ण विश्लेषण शामिल हैं, विशेष रूप से धार्मिक और दार्शनिक विषयों पर। उनकी प्रमुख कृति, राम कथा: उत्पत्ति और विकास, हिंदू धार्मिक अध्ययन का एक आधारभूत ग्रंथ मानी जाती है और रामायण की व्याख्याओं को गहराई से प्रभावित करती है। यह लेख बुल्के के जीवन, हिंदी के प्रति उनके प्रेम, और हिंदी साहित्य एवं भारतीय बौद्धिक धरोहर को समृद्ध बनाने के उनके प्रमुख योगदानों पर प्रकाश डालता है।

## हिंदी और शैक्षणिक उपलब्धियों में प्रवीणता-

विदेशी होते हुए भी, बुल्के ने हिंदी भाषा में असाधारण निपुणता प्राप्त की, चाहे वह बोलने में हो या लिखने में। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य का गहन अध्ययन किया, जहां उन्होंने रामायण पर अपने अद्वितीय शोध के लिए डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उनकी डॉक्टरेट थीसिस, "राम कथा: उत्पत्ति और विकास", में रामायण की उत्पत्ति, विकास और विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं में इसके विविध अर्थों का विश्लेषण किया गया। यह कार्य भारतीय महाकाव्यों और उनकी सांस्कृतिक महत्ता के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण योगदान बना हुआ है।

बुल्के की जटिल भारतीय ग्रंथों की सटीक और संवेदनशील व्याख्या करने की क्षमता ने भारतीय विद्वानों के बीच उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई। संस्कृत में उनकी दक्षता ने हिंदू शास्त्रों और दार्शनिक परंपराओं की उनकी समझ को और अधिक समृद्ध किया, जिससे वे इन ग्रंथों का मूल रूप में अध्ययन कर सकेराम कथा: प्रारंभ और विकास फादर द्वारा किए गए अध्ययन "राम कथा: प्रारंभ और विकास" में रामायण की गहरी और विस्तृत जांच की गई है। इस विद्वतापूर्ण अध्ययन में, उन्होंने रामायण की कथा के ऐतिहासिक, सामाजिक और शैक्षिक विकास का विश्लेषण किया है। फादर ने रामायण के विभिन्न संस्करणों की तुलना की है, जिसमें वाल्मीकि द्वारा रचित प्रारंभिक संस्कृत पाठ के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, बांग्ला, ओडिया, मलयालम और अन्य भाषाओं में क्षेत्रीय संस्करणों को भी शामिल किया है। उनका शोध यह स्पष्ट करता है कि रामायण केवल एक धार्मिक पाठ नहीं है; यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर बन चुकी है, जो भारत और दक्षिण एशिया के विभिन्न समुदायों को प्रभावित करती है। बुल्के ने यह भी अध्ययन

किया है कि रामायण की कथा को प्राचीन कथाओं, नृत्य-नाटकों और पारंपरिक गीतों के माध्यम से कैसे आगे बढ़ाया गया है। इस शोध में तुलसीदास के रामचरितमानस और कंबन के कंब रामायण जैसे कार्यों का महत्व भी उजागर किया गया है। इसके अलावा, , बुल्के ने रामायण पर विदेशी शैक्षिक परंपराओं के प्रभाव का भी विश्लेषण किया है, और दिखाया है कि इसका प्रभाव न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में, बल्कि दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों जैसे इंडोनेशिया, थाईलैंड और कंबोडिया में भी महत्वपूर्ण है। बुल्के का शोध धार्मिक व्याख्याओं से परे जाता है, और रामायण को महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों जैसे न्याय, धर्म, वफादारी और सहानुभूति का प्रतीक मानते हुए प्रस्तुत करता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया है कि कैसे इस महाकाव्य ने भारतीय कला, संगीत और रंगमंच को आकार दिया है। यह अध्ययन भारतीय शैक्षिक अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में कार्य करता है और रामायण के वैश्विक महत्व पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। बुल्के का कार्य यह सिद्ध करता है कि रामायण केवल एक कथा नहीं है, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक धरोहर है जो समय और
भौगोलिक सीमाओं से परे है।बुल्के का इंग्लिश-हिंदी शब्दकोश द्विभाषी शब्दकोशविज्ञान में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यह भाषा और संस्कृति के संरक्षण और समझ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्हें अपने अनुसंधान की गंभीरता और गहराई के लिए जाना जाता है। बुल्के, एक बेल्जियन जेसुइट पादरी, भाषाविद और विद्वान, ने हिंदी और इसकी बोलियों का अध्ययन करने में कई वर्ष समर्पित किए। उनका कार्य उन अंग्रेजी बोलने वालों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी का स्रोत है जो हिंदी सीखना या उपयोग करना चाहते हैं। संस्कृति और भाषा के आदान-प्रदान में भूमिका बुल्के के शब्दकोश की एक खासियत यह है कि यह अंग्रेजी और हिंदी जैसी दो अलग- अलग संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम करता है। हिंदी, जिसे दुनियाभर में लाखों लोग बोलते हैं, एक समृद्ध सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा से जुड़ी हुई है, जिसकी जटिलताओं को अंग्रेजी बोलने वालों के लिए समझना कठिन हो सकता है।
1949 में, रांची के सेंट जेवियर कॉलेज में संस्कृत और हिंदी विभाग के प्रमुख के रूप मेंकार्यभार संभाला। हालांकि, शुरुआती समस्याओं के कारण उन्होंने प्रोफेसर बनने की बजायएक विद्वान के रूप में अपने करियर पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। उन्हें 17वीं सदी के हिंदीकवि तुलसीदास में गहरी रुचि थी, जिनकी रचनाओं पर उन्होंने अपनी डॉक्टोरल थीसिस लिखी। बुल्के ने प्रसिद्ध नाटक ब्लू बर्ड को हिंदी में रूपांतरित किया और उसे नील पंची के नाम से प्रस्तुत किया। उन्हें तुलसीदास और उनके भक्ति रचनाओं पर बोलने के लिए अक्सर आमंत्रित किया जाता था, और वह इस कार्य को बहुत उत्साह के साथ करते थे। अपने कार्यों के माध्यम से उन्होंने लोगों को उनके आध्यात्मिक धरोहरों के गहरे मूल्यों से जोड़ा, और उनकामानना था कि तुलसीदास का साहित्य सुसमाचार की शिक्षाओं के लिए एक बेहतरीन परिचय है। 1951 में, उन्होंने भारतीय नागरिकता प्राप्त की और भारत सरकार द्वारा उन्हें हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय आयोग का सदस्य बनाया गया। बिहार में
रहते हुए उन्होंने दरभंगा के चर्च का दौरा किया और "दिव्यात्माओं और माता सीता की महान भूमि – मिथिला" की सराहना की, और भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के बाद उन्होंने "बिहारी" नाम अपनाया। , बुल्के का निधन 17 अगस्त 1982 को दिल्ली में गैंगरीन के कारण हुआ।
बुल्के का हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान- एक नया दृष्टिकोण
बुल्के का हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान उनके अनुवादक और शब्दकोशकार के रूप मे कार्य था। उनका मानना था कि अनुवाद एक शक्तिशाली उपकरण है जो सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है और साहित्यिक धरोहरों को एक व्यापक दर्शक वर्ग के लिए सुलभ बनाता है। बुल्के का हिंदी-इंग्लिश शब्दकोश, "अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश", छात्रों, शोधकर्ताओं और
लेखकों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन गया। इसकी स्पष्टता, व्यापकता और सटीकता ने इसे दशकों तक एक भरोसेमंद संदर्भ बना दिया। यह शब्दकोश उनकी भाषाई सटीकता और दोनों भाषाओं की गहरी समझ का प्रतीक है। अपने शब्दकोशीय कार्य के अतिरिक्त, बुल्के ने कई ईसाई ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया, जिनमें बाइबिल भी शामिल है। उनके अनुवाद सांस्कृतिक और भाषाई सूक्ष्मताओं के प्रति संवेदनशील थे, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि पाठ भारतीय पाठकों के साथ गूंजे और उनका मूल अर्थ बरकरार रहे।

**हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में समर्थन-**

बुल्के हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में समर्थन देने के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने हिंदी को भारत के विविध भाषाई परिप्रेक्ष्य में एक एकता की ताकत के रूप में देखा और इसके अपनाने और विकास को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया। उनके प्रयास उस व्यापक आंदोलन के साथ मेल खाते थे जो हिंदी को एक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए था, जो क्षेत्रीय विभाजन को पाट सके और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दे सके। सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची में हिंदी के प्रोफेसर के रूप में, बुल्के ने अनगिनत छात्रों को मार्गदर्शन दिया और उन्हें भाषा के प्रति अपनी दीवानगी से प्रेरित किया। उनकी शिक्षा हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक और दार्शनिक समृद्धि पर आधारित थी, जिससे छात्रों को इसकी भूमिका को समझने और भारत की पहचान को आकार देने में इसके महत्व को सराहने के लिए प्रेरित किया।

**आध्यात्मिक और अंतरधार्मिक जुड़ाव-**बुल्के का हिंदी साहित्य से जुड़ाव उनके आध्यात्मिक खोज और अंतरधार्मिक संवाद के प्रति प्रतिबद्धता में गहरे रूप से निहित था। उनका मानना था कि साहित्य सार्वभौमिक सत्य की खोज करने और विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा देने का एक माध्यम हो सकता है। उनकी रचनाएँ अक्सर ईसाई और भारतीय दार्शनिक विचारों का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत करती थीं, जो करुणा, विनम्रता और सत्य की खोज जैसे साझा मूल्यों पर बल देती थीं। भारतीय महाकाव्यों और शास्त्रों के साथ जुड़कर, बुल्के ने यह दिखाया कि कैसे आध्यात्मिकपरंपराएँ एक-दसरे को समृद्ध और पूरक बना सकती हैं।

**विरासत और प्रभाव -**फादर बुल्के का हिंदी साहित्य में योगदान भारतीय बौद्धिक और सांस्कृतिक जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ गया है। उन्हें एक विद्वान, शिक्षक और सांस्कृतिक दूत के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने हिंदी और भारतीय परंपराओं के प्रति अपनी प्रेमभावना केमाध्यम से पूर्व और पश्चिम के बीच पुल का काम किया। बुल्के का कार्य हिंदी साहित्य के शोधकर्ताओं और छात्रों, साथ ही अंतरसांस्कृतिक अध्ययन में रुचि रखने वालों को प्रेरित करता है। उनका जीवन भाषा की परिवर्तनकारी शक्ति और साहित्यिक शोध के स्थायी महत्व का प्रतीक है, जो समझ और एकता को बढ़ावा देने में सहायक हैI

**********